4

अलंकार
(Decoration)

अलंकार शब्द की रचना **दो शब्दों के मेल** से हुई है– '**अलं**' तथा '**कार**'। '**अलं**' का अर्थ है–'**शोभा**' या '**सौंदर्य**'। '**कार**' शब्द 'कर्' धातु से बना रूप है, जिसका अर्थ है–'**करनेवाला**'। इस तरह **अलंकार** शब्द का अर्थ हुआ–'**शोभा करनेवाले**'। अर्थात वे उपादान जो 'शोभा' या 'सौंदर्य' उत्पन्न कर देते हैं। संस्कृत के अलंकारवादी आचार्य; जैसे– भामा, दंडी, रुद्रट आदि ने अलंकारों को इसी अर्थ में लिया है कि अलंकार 'शोभा करनेवाले धर्म हैं, न कि शोभा बढ़ानेवाले'।

हिंदी में प्राय: अलंकारों का अर्थ 'शोभा बढ़ानेवाले' उपादान या अवयव के रूप में लिया गया है। शोभा बढ़ाने का तो अर्थ है कि कोई स्त्री यदि सुंदर है और वह शृंगार कर आभूषण पहन लेती है, तो आभूषण उसकी शोभा में वृद्धि कर देते हैं। अब प्रश्न यह उठता है कि क्या अलंकार असुंदर महिला के सौंदर्य में भी वृद्धि कर सकते हैं?

अलंकारवादी आचार्य जो 'अलंकार' को ही काव्य की आत्मा मानते थे, उनका कहना तो यही था कि 'अलंकार' असुंदर को भी सुंदर कर देते हैं, केवल सुंदरता बढ़ाने का काम नहीं करते। इसीलिए उन्होंने अलंकारों को 'शोभा करान धर्म:' या 'अलं करोतीति अलंकार:' कहा था।

अलंकारवादी आचार्यों के अनुसार, काव्य में 'अलंकार' का यही कार्य है, अत: 'काव्य में शोभा करनेवाले धर्म अलंकार हैं।' ये कविता में 'चमत्कार' पैदा कर देते हैं। 'चमत्कार' शब्द का अर्थ भी यहाँ समझ लेना उपयुक्त होगा। 'चमत्' शब्द का अर्थ है–'बिजली' और 'कार' के अर्थ से आप परिचित हो ही चुके हैं। गरजते काले बादलों के बीच 'बिजली' चमकती है और हमारा मन मोहित कर लेती है, उसी तरह काव्य में अलंकार भी बिजली जैसी चमक या प्रकाश-सौंदर्य पैदा कर हमारे मन को अपनी ओर खींच लेते हैं।

भाषा में दो ही तत्व प्रधान होते हैं–'अर्थ' एवं 'अभिव्यक्ति'। अभिव्यक्ति के स्तर पर शब्दों तथा शब्दों से बने पद और पदबंधों का महत्व होता है, तो 'अर्थ' भाषा की आंतरिक वस्तु है। अलंकारवादी आचार्यों ने जब 'अलंकारों' को काव्य की आत्मा घोषित किया, तो उन्होंने 'अलंकार' के क्षेत्र में एक-एक वर्ण से बने शब्दों के सौंदर्य से लेकर अर्थ से उत्पन्न होनेवाली समस्त सौंदर्य-छटाओं को सम्मिलित कर लिया और अलंकारों के **दो** भेद किए–

1. शब्दालंकार
2. अर्थालंकार

यों तो दोनों वर्गों के अंतर्गत आनेवाले अलंकारों की संख्या सैकड़ों में है, लेकिन कक्षा IX के पाठ्यक्रम में निम्नलिखित शब्दालंकारों एवं अर्थालंकारों को रखा गया है–

1. शब्दालंकार	: अनुप्रास	**2. अर्थालंकार**	: उपमा
	: यमक		: रूपक
	: श्लेष		: उत्प्रेक्षा
			: अंतिशयोक्ति
			: मानवीकरण

सबसे पहले हम शब्दालंकारों की चर्चा करेंगे।

शब्दालंकार

काव्य में जहाँ शब्दों के विशिष्ट प्रयोग से चमत्कार उत्पन्न होता है, वहाँ 'शब्दालंकारों' की सत्ता होती है। शब्दालंकारों का अस्तित्व **शब्द-विशेष** के कारण होता है।

उदाहरणस्वरूप– यदि किसी **शब्द-विशेष** के स्थान पर कोई अन्य समानार्थी शब्द रख दिया जाए तो 'चमत्कार' समाप्त हो जाता है। उदाहरण के लिए, **वर को छोड़ और वर ले लो** पंक्ति में 'वर' शब्द के दो बार प्रयोग करने से चमत्कार उत्पन्न हुआ है। यहाँ पहले 'वर' शब्द का अर्थ है–'पति' तथा दूसरे **'वर'** का अर्थ है–'वरदान'।

इस पंक्ति का संबंध 'सावित्री' की कथा के उस प्रसंग से है, जहाँ यमराज सावित्री के पति सत्यवान के प्राण लेकर जा रहे हैं और वह अपने पति के प्राण लौटाने का अनुरोध कर रही है। यमराज कह रहे हैं कि वर (पति) को छोड़कर तुम कोई भी वर (वरदान) माँग लो। यहाँ यदि पहले 'वर' के स्थान पर समानार्थी शब्द 'पति' रख दिया जाए और कहा जाए 'पति को छोड़ और वर ले लो' तो कविता के जिस चमत्कार को कवि उत्पन्न करना चाहता है, समाप्त हो जाता है।

शब्दालंकार के भेद

1. अनुप्रास अलंकार

अनुप्रास के अंतर्गत आचार्यों ने शब्द की रचना करनेवाले 'वर्णों' के प्रयोग से उत्पन्न सौंदर्य या चमत्कार को लिया है।

किसी कविता में समान वर्णों की यदि आवृत्ति होती है या समान वर्ण बार-बार आते हैं, तो वहाँ 'अनुप्रास अलंकार' होता है।

वर्णों की आवृत्ति शब्दों के आरंभिक वर्णों के रूप में, मध्य के वर्णों के रूप में या अंत के वर्णों के रूप में अर्थात किसी भी रूप में हो सकती है। उदाहरण देखिए–

शब्द के आरंभिक वर्णों में आवृत्ति

- **मो**र **मु**कुट **म**कराकृत कुंडल, अरुन तिलक दिए भाल ('म' वर्ण की आवृत्ति)
- **क**ल **का**नन **कुं**डल मोर पखा, उर पै **ब**नमाल **बि**राजत है ('क' तथा 'ब' वर्ण की आवृत्ति)
- **त**रनि **त**नुजा **त**ट **त**माल **त**रुवर बहु छाए ('त' वर्ण की आवृत्ति)
- **का**लिंदी **कू**ल **क**दंब की डारन ('क' वर्ण की आवृत्ति)
- रघुपति राघव राजा राम ('र' वर्ण की आवृत्ति)
- **सु**रभित **सुं**दर **सु**खद **सु**मन तुझ पर खिलते हैं ('स' वर्ण की आवृत्ति)
- **स**ठ **सु**धरहिं **स**त **सं**गति पाई ('स' वर्ण की आवृत्ति)
- **मु**दित **म**हीपति **मं**दिर आए। **से**वक **स**चिव **सु**मंत बुलाए। ('म' तथा 'स' वर्ण की आवृत्ति)
- प्रभु **मु**द्रिका **मे**लि **मु**ख **मा**हीं ('म' वर्ण की आवृत्ति)

शब्द के मध्य के वर्णों में आवृत्ति

- छोरटी है गोरटी या चोरटी अहीर की ('र' वर्ण की आवृत्ति)

शब्द के अंतिम वर्णों में आवृत्ति

- छोर**टी** है, गोर**टी** या चोर**टी** अहीर की ('ट' वर्ण की आवृत्ति)
- कंक**न**, किंकि**न**, नूपुर धु**नि**, सु**नि** ('न' वर्ण की आवृत्ति)
- जाके सिर मोर मुकुट मे**रो** पति सोई ('र' वर्ण की आवृत्ति)
- म**न** क्रम वच**न** ध्या**न** जो लावैं ('न' वर्ण की आवृत्ति)

- **संकट कटै मिटै** सब पीरा ('ट' वर्ण तथा 'ऐ' वर्ण की आवृत्ति)
- **सुख दुख** अपने बंधुओं का आप अपना मान लो। ('ख' वर्ण की आवृत्ति)

अन्य मिश्रित उदाहरण

मिश्रित उदाहरणों में वर्णों की आवृत्ति आदि, मध्य और अंत कहीं भी हो सकती है; जैसे–

- **चाहे जहाँ जाकर रहे जी**वित न तू **रह** पाएगा
- जग में सचर-अचर जितने हैं, सारे कर्म निरत हैं
- रवि जग में शोभा **सरसता सोम सुधा बरसाता**
- जिस पर गिरकर उदर दरी से तुमने जन्म लिया है।
- समदरसी है नाम तुम्हारौ, सोई पार **करौं**
- जा**की कृ**पा पंगु गिर लंघै, अंधे **कौ** सब **क**छु दरसाई

2. यमक अलंकार

अनुप्रास अलंकार में जहाँ वर्णों का 'चमत्कार' प्रधान होता है, वहीं 'यमक' में शब्दों का।

जहाँ एक शब्द की आवृत्ति एक से अधिक बार होती है और हर बार उसका अर्थ भिन्न होता है, वहाँ 'यमक अलंकार' होता है।

आरंभ में **वर** को छोड़ और **वर** ले लो में 'वर' शब्द यमक अलंकार का ही उदाहरण है।

अन्य उदाहरण–

- बापू को कर नित दूर-दूर,
  हर **बरस, बरस** दिन आता है।
  यहाँ प्रथम 'बरस' शब्द का अर्थ है–'वर्ष/साल' तथा दूसरे 'बरस' शब्द का अर्थ है 'मृत्यु' तथा 'बरस दिन' का अर्थ है–'मृत्यु दिवस', अंतः यहाँ 'यमक अलंकार' है।
- माला फेरत जुग भया, गया न मन का फेर।
  कर का **मनका** डारिके, मन का **मनका** फेर।।
  यहाँ 'कर का मनका ... मनका फेर' पंक्ति में **मनका** शब्द दो बार आया है। पहले 'मनका' का अर्थ है–'मन का' या 'माला का दाना', दूसरे 'मनका' का अर्थ है–'हृदय का' अर्थात पूरी पंक्ति में कवि कह रहा है कि 'कर का मनका' (हाथ की माला) को फेंक दे तथा 'मन का मनका' (मन की/हृदय की माला) का जाप कर। अत: यह 'यमक अलंकार' का उदाहरण है।
- **कनक कनक** ते सौगुनी मादकता अधिकाय।
  या खाए बौरात है, वा पाए बौराय।।
  यहाँ 'कनक' शब्द की आवृत्ति दो बार हुई है। पहले 'कनक' का अर्थ है–'धतूरा' तथा दूसरे का अर्थ है–'सोना'। पंक्ति का अर्थ है कि पहले 'कनक' (धतूरा) की तुलना में दूसरे 'कनक' (सोना) में सौगुनी मादकता है क्योंकि पहले अर्थात धतूरे को तो व्यक्ति खाकर पागल होता है, पर सोने अर्थात धन-संपत्ति को तो पाकर ही पागल हो जाता है।
- 'तीन **बेर** खाती थीं वे तीन **बेर** खाती हैं'
  यहाँ पहले 'बेर' का अर्थ 'बेर' (फल) है और दूसरे 'बेर' का अर्थ 'बार' है। पंक्ति का अर्थ है कि वह केवल 'तीन बेर फल (विशेष) तीन बार खाती हैं।'
- 'काली **घटा** का घमंड **घटा** नभतारक मंडल वृंद खिले'
  यहाँ 'घटा' शब्द पर यमक अलंकार है। पहली 'घटा' शब्द का अर्थ है– 'काले बादलों की घटा' तथा दूसरी घटा का अर्थ है– 'कम हुआ'। पंक्ति का अर्थ है कि जब आकाश में 'तारा-मंडल' उदित हुआ, तो 'काली घटा' का घमंड घट गया।

• 'तू मोहन के **उरबसी**, है **उरबसी** समान।'

पहले 'उरबसी' शब्द का अर्थ है–'उर/हृदय में बसी हुई' तथा दूसरे 'उरबसी' का अर्थ है– 'उर्वशी' (देव सुंदरी)। पंक्ति का अर्थ है कि तू कृष्ण के मन में 'उर्वशी' के समान बसी हुई है।

3. श्लेष अलंकार:

'श्लेष' शब्द का अर्थ है–'चिपकना'।

जहाँ किसी एक ही शब्द में एक से अधिक अर्थ चिपके होते हैं, वहाँ 'श्लेष अलंकार' होता है। अर्थात जहाँ काव्य में कोई शब्द एक से अधिक अर्थों को व्यक्त करता है, वहाँ 'श्लेष अलंकार' होता है; जैसे-

दे रहा हो कोकिल सानंद
सुमन को ज्यों **मधुमय** संदेश

यहाँ 'सुमन' तथा 'मधुमय' दोनों पर श्लेष अलंकार है। सुमन शब्द के दो अर्थ हैं– 'सुंदर मन' तथा 'पुष्प' और 'मधुमय' का अर्थ है– 'मधुर' तथा 'वसंत ऋतु'। इस तरह पूरी पंक्ति से दो अर्थ निकल रहे हैं–

(i) कोयल आनंदित होकर 'सुंदर मन' वाले लोगों को मधुर संदेश दे रही है अर्थात कोयल की वाणी उन्हें मधुर लगती है।

(ii) कोयल प्रसन्न होकर फूलों को यह संदेश दे रही है कि 'वसंत ऋतु' आनेवाली है।

अन्य उदाहरण–

- रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।
  पानी गए न ऊबरे, मोती मानुष चून।।
  यहाँ दूसरी पंक्ति में आए 'पानी' शब्द के तीन अर्थ है–
  (i) 'मोती' के संदर्भ में 'चमक'
  (ii) मानुष/मनुष्य के संदर्भ में 'इज़्ज़त'
  (iii) चूने के संदर्भ में 'जल'
  कविता का अर्थ है कि मनुष्य को 'पानी' (इज़्ज़त) बनाए रखनी चाहिए। यदि 'पानी' चला जाए, तो 'मोती', 'मनुष्य' और 'चूना' उबर नहीं पाते।
- '**सुबरन** को ढूँढ़त फिरत, कवि, व्यभिचारी, चोर'
  पंक्ति का अर्थ है कि कवि, व्यभिचारी तथा चोर तीनों ही 'सुबरन' अर्थात 'सुवर्ण' को ढूँढ़ते फिरते हैं। यहाँ 'सुबरन' (सुवर्ण) शब्द पर श्लेष अलंकार है और इसके तीन अर्थ इस प्रकार हैं–
  (i) कवि के संदर्भ में = सुबरन अर्थात सुंदर वर्ण/अक्षर
  (ii) व्यभिचारी के संदर्भ में = सुबरन अर्थात सुंदर वर्ण/रंगवाली सुंदरियाँ
  (iii) चोर के संदर्भ में = सुबरन अथार्त सुवर्ण या सोना
- 'मधुबन की छाती को देखो, सूखी कितनी इसकी **कलियाँ**'
  यहाँ 'कलियाँ' शब्द पर श्लेष अलंकार है। इसके दो अर्थ हैं–
  (i) कली (फूल बनने से पहले की स्थिति) तथा
  (ii) यौवन आने से पहले की दशा।
- जो रहीम गति दीप की, कुल कपूत गति सोय।
  बारे उजियारो करे, **बढ़े** अँधेरो होय।।
  यहाँ 'बारे' तथा 'बढ़े' शब्द पर श्लेष अलंकार है क्योंकि इन दोनों के दो-दो अर्थ हैं–

(i) कपूत (कुपुत्र) के संदर्भ में = बचपन में (बारे)
दीपक के संदर्भ में = जलने पर (बारे)
(ii) कपूत के संदर्भ में = बड़ा होने पर (बाढ़े)
दीपक के संदर्भ में = बुझने पर (बाढ़े)

दोहे का अर्थ है कि रहीम के अनुसार 'दीपक' और 'कुपुत्र' दोनों के लक्षण समान होते हैं। दीपक जलता है तब उजाला करता है और कुपुत्र के कार्यकलाप बचपन में तो अच्छे लगते हैं, पर बड़े होने पर अँधेरा फैला देते हैं, जबकि दीपक बढ़ जाने/बंद हो जाने पर अँधेरा फैला देता है।

- मेरी भव-बाधा हरौ, राधा नागरि सोय।
  जा तन की झाँई परै, **स्यामु हरित दुति** होय।
  यहाँ 'स्यामु' तथा 'हरित दुति' के दो-दो अर्थ इस प्रकार हैं–
  (i) स्यामु = श्याम/श्रीकृष्ण
  = कालिमा, पाप
  (ii) हरित दुति = हरे रंग के
  = प्रसन्नचित्त

  पंक्ति का अर्थ है कि 'राधा' जिनका रंग श्वेत है, उनके शरीर की झाँई/परछाई पड़ते ही कृष्ण जो काले रंग के हैं, 'हरे' रंग के हो जाते हैं तथा दूसरा अर्थ यह कि वे 'प्रसन्नचित्त' हो जाते हैं।
- 'मंगन को देखि **पट** देत बार-बार है।'
  यहाँ श्लेष अलंकार है, क्योंकि 'पट' शब्द के दो अर्थ हैं–
  'पट' = वस्त्र
  = दरवाज़ा

  पंक्ति का पहला अर्थ है– माँगनेवालों (भिखारियों) को देखकर बार-बार 'पट' दरवाज़ा बंद कर लेती है तथा दूसरा अर्थ है–भिखमंगों को देखकर उन्हें बार-बार 'वस्त्र' दान में देती है।
- 'विधि के समान हैं, **विमानीकृत राजहंस**'
  यहाँ केशवदास ने राजा दशरथ की तुलना 'विधि' (ब्रह्मा) से की है और कहा है कि राजा दशरथ 'विधि' के समान 'विमानीकृत राजहंस' हैं। इसके निम्नलिखित दो अर्थ हैं–
  (i) ब्रह्मा ने राजहंस (हंसों के राजा) को अपना विमान बनाया हुआ है।
  (ii) राजा दशरथ ने राजहंस अर्थात बड़े-बड़े राजाओं को विमानीकृत कर दिया है अर्थात उनका मान भंग कर दिया है।

अर्थालंकार

'अर्थालंकार' अर्थ द्वारा उत्पन्न सौंदर्य पर कार्य करते हैं। अर्थालंकारों को समझने के लिए कुछ आधारभूत बातों को समझ लेना चाहिए।

अर्थालंकार से संबंधित आधारभूत बातें–

1. काव्य में कवि किसी व्यक्ति या वस्तु का वर्णन करता है और उसकी समानता किसी बाहरी व्यक्ति या वस्तु से दिखाता है। कवि जिस व्यक्ति/वस्तु का वर्णन करता है, वह कवि के लिए **प्रस्तुत** होता है और जिस बाहरी व्यक्ति या वस्तु से उसकी समानता दिखाई जाती है, उसे **अप्रस्तुत** कहते हैं।

2. इस तरह समस्त काव्य 'प्रस्तुत' तथा 'अप्रस्तुत' के बीच ही चलता है। कभी कवि प्रस्तुत तथा अप्रस्तुत की तुलना करता है, कभी प्रस्तुत तथा अप्रस्तुत की समानता बताता है, कभी प्रस्तुत पर अप्रस्तुत का आरोप करता है, तो कभी प्रस्तुत में अप्रस्तुत की संभावना करता है।
3. इन्हीं सब प्रक्रियाओं के कारण विभिन्न प्रकार के अर्थालंकार सामने आते हैं।
4. अलंकार शास्त्र में 'प्रस्तुत' को **उपमेय** तथा अप्रस्तुत को **उपमान** भी कहा गया है।

अर्थालंकार के भेद

1. उपमा अलंकार

जब दो व्यक्तियों या वस्तुओं में समान गुण/धर्मों के कारण समानता बताई जाती है, वहाँ 'उपमा अलंकार' होता है।

जैसे– 'सीता की आँखें मृग के समान चंचल हैं।'

इस पंक्ति में सीता की आँखों की चंचलता मृग के समान बताई गई है। अत: यहाँ सीता की आँखें 'प्रस्तुत' होंगी और मृग 'अप्रस्तुत'।

- दो वस्तुओं के बीच जब समानता बताई जाती है तब चार वस्तुएँ हमारे समक्ष आती हैं–
  (i) **प्रस्तुत या उपमेय–** जिस व्यक्ति या वस्तु की समानता बताई जाती है, वह प्रस्तुत या उपमेय होता है। उपर्युक्त पंक्ति में उपमेय हैं– सीता की आँखें।
  (ii) **अप्रस्तुत या उपमान–** जिस वस्तु से समानता बताई जा रही हो, वह वस्तु 'उपमान' कहलाती है। उपर्युक्त पंक्ति में उपमान है–'मृग'।
  (iii) **साधारण धर्म–** वह समान गुण या धर्म, जिसके आधार पर समानता बताई गई हो। उपर्युक्त पंक्ति में 'चंचल।'
  (iv) **वाचक शब्द–** अर्थात समानता को बतानेवाला शब्द। उपर्युक्त पंक्ति में 'के समान' वाचक शब्द है।
- ये चारों 'उपमा अलंकार' के अंग कहलाते हैं।
- जिस उपमा अलंकार में उपर्युक्त चारों अंग पाए जाते हैं, उसे **पूर्णोपमा अलंकार** कहते हैं तथा यदि किसी उपमा अलंकार में किसी अंग का लोप होता है, उसे '**लुप्तोपमा**' कहते हैं।

दोनों के उदाहरण देखिए–

पूर्णोपमा

- 'पीपर पात सरिस मन डोला'
  (i) उपमेय (प्रस्तुत) = मन
  (ii) उपमान (अप्रस्तुत) = पीपर-पात
  (iii) साधारण धर्म = डोलना
  (iv) वाचक शब्द = सरिस (के समान)
- 'यह देखिए अरविंद-से शिशुवृंद कैसे सो रहे'
  (i) उपमेय (प्रस्तुत) = शिशुवृंद
  (ii) उपमान (अप्रस्तुत) = अरविंद
  (iii) साधारण धर्म = कैसे सो रहे
  (iv) वाचक शब्द = से
- 'हरिपद कोमल कमल-से'
  (i) उपमेय (प्रस्तुत) = हरिपद
  (ii) उपमान (अप्रस्तुत) = कमल

(iii) साधारण धर्म = कोमल
(iv) वाचक शब्द = से

लुप्तोपमा

- 'मखमल के झूल पड़े हाथी-सा टीला'
  (i) उपमेय (प्रस्तुत) = टीला
  (ii) उपमान (अप्रस्तुत) = मखमल के झूल पड़े हाथी
  (iii) साधारण धर्म = लुप्त
  (iv) वाचक शब्द = सा
- 'वह नवनलिनी-से नयनवाला कहाँ है'
  (i) उपमेय (प्रस्तुत) = नयनवाला
  (ii) उपमान (अप्रस्तुत) = नवनलिनी
  (iii) साधारण धर्म = लुप्त
  (iv) वाचक शब्द = से

अन्य उदाहरण–

- हाय! फूल-सी कोमल बच्ची हुई राख की थी ढेरी (बच्ची की तुलना फूल से)
- उषा सुनहले तीर बरसाती जयलक्ष्मी-सी उदित हुई (उषा की तुलना तीर बरसाती जयलक्ष्मी से)
- नीलगगन सदृश शांत था सो रहा (सोते हुए व्यक्ति की तुलना शांत नीलगगन से)
- कबिरा माया मोहिनी जैसे मीठी खाँड़ (मोहिनी माया की तुलना मीठी खाँड़ से)
- उधर गरजतीं सिंधु लहरियाँ, कुटिल काल के ज्वालों-सी
  चली आ रहीं फेन उगलती फन फैलाए व्यालों-सी
  (सिंधु की लहरों की तुलना फन फैलाकर आनेवाली सर्पिणियों से)
- निकल रही थी मर्म वेदना करुणा विकल कहानी-सी (मर्म वेदना की तुलना करुणा विकल कहानी के साथ।)
- उषा ज्योत्स्ना-सा यौवन स्मित (यौवन स्मित की तुलना उषा ज्योत्स्ना के साथ।)
- गंगा तेरा नीर अमृत सम उत्तम है (गंगा के जल की तुलना अमृत के साथ)
- तब तो बहता समय शिला-सा बन जाएगा। (समय की तुलना शिला के साथ)
- फैली खेतों में दूर तलक
  मखमल-सी कोमल हरियाली (हरियाली की तुलना मखमल के साथ)
- लिपटीं जिसमें रवि की किरणें।
  चाँदी की-सी उजली जाली। (हरियाली में लिपटीं रवि की किरणों की तुलना चाँदी की जाली के साथ)
- मखमली पेटियों-सी लटकी
  छीमियाँ, छिपाए बीज लड़ी (बीजों की लड़ियों को छिपाए छीमियों की तुलना मखमली पेटियों के साथ)
- मरकत डिब्बे-सा खुला ग्राम (ग्राम की तुलना मरकत के डिब्बे के साथ)
- सुंदर गेहूँ की बालों पर, मोती के दानों-से हिमकण (हिमकणों की तुलना मोती के दानों के साथ)

2. रूपक अलंकार

'रूपक अलंकार' वहाँ होता है, जहाँ 'प्रस्तुत' और 'अप्रस्तुत' में बहुत अधिक समानता होने के कारण दोनों को एक समझ लिया जाता है या 'उपमेय' पर 'उपमान' का आरोप किया जाता है।

जैसे– 'कमल-नयन' का अर्थ है–'कमल रूपी नेत्र।'

'उपमा' तथा 'रूपक' दोनों में यही अंतर है कि 'उपमा' में जहाँ उपमेय तथा उपमान में समानता दिखाई जाती है, वहाँ 'रूपक' में उपमेय पर उपमान का आरोपण किया जाता है।

अन्य उदाहरण–

- **चरण-कमल** बंदौ हरिराई (कमल रूपी चरण: उपमेय = चरण, उपमान = कमल)
- **विष-बाण** बूँद से छूटेंगे (विष रूपी बाण: उपमेय = बाण, उपमान = बिष)
- **शशि-मुख** पर घूँघट डाले
  अंचल में दीप छिपाए (शशि रूपी मुख: उपमेय = मुख, उपमान = शशि)
- **अंबर-पनघट** में डुबो रही
  तारा-घट उषा-नागरी (पनघट रूपी अंबर: उपमेय =पनघट, उपमान = अंबर)
  अर्थ– अंबर रूपी पनघट में उषा रूपी नागरी (स्त्री) तारा रूपी घट (घड़े) को डुबो रही है (रात्रि समाप्त होने तथा सुबह होने का सुंदर चित्रण है।)
  अंबर-पनघट : उपमेय = पनघट, उपमान = अंबर
  तारा-घट : उपमेय = घट, उपमान = तारा
  उषा-नागरी : उपमेय = नागरी, उपमान = उषा
- **अभिमन्यु-धन** के निधन में कारण हुआ जो मूल है (अभिमन्यु रूपी धन)
- सतत ज्वलित **दुख-दावानल** में, जग के दारुन रन में (दुख रूपी दावानल)
- ओ चिंता की पहली रेखा, अरी **विश्व-वन की व्याली** (विश्व रूपी वन की सर्पिणी)
- आए **महंत-वसंत** (महंत रूपी वसंत)
- मैया मैं तो **चंद्र-खिलौना** लैहों (चंद्रमा रूपी खिलौना)
- पायो जी मैंने **राम-रतन धन** पायो (राम-रतन रूपी धन)
- उदित **उदयगिरि-मंच** पर, रघुवर **बाल-पतंग**
  विकसे **संत-सरोज** सब, हरषे **लोचन-भृंग।** (उदयगिरी रूपी मंच, बाल-सूर्य रूपी रघुवर) (सरोज रूपी सब संत, भृंग (भँवरे) रूपी लोचन)
- वन-शारदी **चंद्रिका-चादर** ओढ़े (चंद्रिका रूपी चादर)
- वाडव ज्वाला-सी सोती थी, इस **प्रणय-सिंधु** के तल में (प्रणय रूपी सिंधु)
- हरी-भरी सी दौड़-धूप औ; **जल-माया** की चल रेखा (जल रूपी माया)
- **माया-दीपक नर-पतंग** भ्रमि-भ्रमि इवै पड़ंत (माया रूपी दीपक तथा नर रूपी पतंगें)
- वे शत्रु सत्वर **शोक-सागर-मग्न** दिखेंगे सभी (शोक रूपी सागर में मग्न)
- क्या उनका **उपकार-भार** तुम पर लवलेश नहीं है (उपकार रूपी भार)

3. उत्प्रेक्षा अलंकार:

(i) जहाँ प्रस्तुत पर अप्रस्तुत की या 'उपमेय' पर 'उपमान' की संभावना की जाती है, वहाँ **'उत्प्रेक्षा अलंकार'** होता है।

(ii) उत्प्रेक्षा अलंकार में प्रस्तुत तथा अप्रस्तुत के गुण-धर्म की समानता के कारण समान होने की संभावना कर ली जाती है या **'उपमेय'** को 'उपमान' जैसा मान लिया जाता है।

(iii) उत्प्रेक्षा अलंकार में संभावना करने के लिए प्राय: 'मानो', 'मनहु', मनहूँ, 'जानो', 'जनहु' जनहुँ, **'ज्यों'**, 'जनु' आदि वाचक शब्दों का प्रयोग किया जाता है। अत: ये वाचक शब्द जिस कविता में आएँ, समझ लीजिए वहाँ 'उत्प्रेक्षा' अलंकार है; जैसे–

उस काल मारे क्रोध के तन काँपने उसका लगा,
मानो हवा के जोर से सोता हुआ सागर जगा।

यहाँ अर्जुन के क्रोध का वर्णन किया गया है। उस समय क्रोध के कारण अर्जुन का शरीर इस प्रकार

काँपने लगा **मानो** हवा के ज़ोर से सागर उमड़ पड़ा हो। यहाँ क्रोध से काँपते शरीर पर हवा के ज़ोर से उमड़ते सागर की संभावना की गई है तथा वाचक शब्द 'मानो' का भी प्रयोग हुआ है, अतः यहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार है।

अन्य उदाहरण–

- स्वर्ण शालियों की कलमें थीं, दूर-दूर तक फैल रहीं।
  शरद-इंदिरा के मंदिर की, **मानो** कोई गैल रही।।
  अर्थात– यहाँ दूर-दूर तक फैली स्वर्ण शालियों की कलमों में शरद-इंदिरा के मंदिर की गली की संभावना की गई है तथा यहाँ 'मानो' वाचक शब्द का प्रयोग होने के कारण 'उत्प्रेक्षा अलंकार' है।
- बार-बार उस भीषण रव से, कँपती धरणी देख विशेष।
  मानो नील व्योम उतरा हो, आलिंगन के हेतु अशेष।।
  अर्थात– यहाँ भीषण रव के कारण धरती के कंपन पर यह संभावना की गई है कि मानों यह कंपन नीले आकाश के आलिंगन के कारण है। 'मानो' वाचक शब्द का प्रयोग ही उत्प्रेक्षा अलंकार की सूचना दे रहा है।
- सोहत ओढ़े पीत-पट, स्याम सलोने गात।
  मनहुँ नीलमणि सैल पर, आतप पर्‌यौ प्रभात।।
  अर्थात– सलोने शरीरवाले कृष्ण पीत-वस्त्र पहनकर इस प्रकार सुशोभित हो रहे हैं, मानो नीलमणि पर्वत पर सूर्य का प्रभाव पड़ा हो। यहाँ उपमेय में उपमान की संभावना की गई है तथा 'मनहुँ' वाचक शब्द का प्रयोग होने के कारण 'उत्प्रेक्षा अलंकार' है।
- 'सिर फट गया उसका वहीं, **मानो** अरुण रंग का घड़ा।'
  अर्थात– यहाँ पर फटा हुआ सिर उपमेय पर लाल रंग के घड़े की संभावना की गई है तथा 'मानो' वाचक शब्द का प्रयोग किया गया है, अतः 'उत्प्रेक्षा अलंकार' है।
- कहती हुई यों उत्तरा के नेत्र जल से भर गए।
  हिमकणों से पूर्ण **मानो** हो गए पंकज नए।।
  अर्थात– यहाँ उत्तरा के जल से भरे हुए नेत्रों में हिमकणों से पूर्ण नए पंकजों (कमलों) की संभावना की गई है तथा वाचक शब्द है– 'मानो', अतः यहाँ 'उत्प्रेक्षा अलंकार' है।
- 'पद्‌मावती सब सखी बुलाई, **मनु** फुलबारि सबै चलि आई।'
  अर्थात– 'पद्‌मावती' ने अपनी समस्त सखियों को बुलाया और वे सब आई तो ऐसा लगा, जैसे फुलवारी चली आई हो। यहाँ वाचक शब्द 'मनु' है, अतः यहाँ 'उत्प्रेक्षा अलंकार' है।
- नील परिधान बीच सुकुमार, खुल रहा मृदुल अधखुला अंग
  खिला हो **ज्यों** बिजली का फूल, मेघवन बीच गुलाबी रंग।
  अर्थात– यहाँ नायिका (श्रद्‌धा) के सुंदर अधखुले अंग नीले वस्त्रों के बीच ऐसे लग रहे थे मानो मेघ रूपी वन के बीच बिजली का फूल खिला हो। यहाँ वाचक शब्द 'ज्यों' है, अतः यहाँ 'उत्प्रेक्षा अलंकार' है।
- 'मिटा मोदु, मन भए मलीने
  विधि निधि दीन लेत **जनु** छीन्हे।'
  अर्थात– मोद मिट गया, मन मलिन हो गए, ऐसा लगा मानो विधाता ने दी हुई निधि (खज़ाना) वापस ले लिया हो। वाचक शब्द 'जनु' है। अतः 'उत्प्रेक्षा अलंकार' है।

• बहुत काली सिल
जरा-से लाल केसर-से
कि **जैसे** धुल गई हो

अर्थात्– यहाँ सूर्योदय का वर्णन है। रात में आकाश सिल के समान होता है। जब प्रातः काल सूर्योदय होने को होता है तब ऐसा लगता है मानो आकाश रूपी सिल लाल केसर के रंग से धुल गई हो। वाचक शब्द 'जैसे' है। यहाँ 'उत्प्रेक्षा अलंकार' है।

• पुलक प्रकट करती है धरती, हरित तृणों के नोकों से।
मानो झूम रहे हों तरु भी, मंद पवन के झोकों से।।

अर्थात्– पृथ्वी से जो हरे-हरे तृण निकलते हैं, उनके माध्यम से मानो पृथ्वी अपना पुलक या आनंद को प्रकट करती है तथा मंद पवन के झोंकों से जो वृक्ष झूमते हैं, वे भी मानो पृथ्वी का पुलक हों। यहाँ 'उत्प्रेक्षा अलंकार' है।

• पाहुन **ज्यों** आए हों गाँव में शहर के,
मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।

अर्थात्– यहाँ कवि ने मेघों के बन-ठन के आने पर कवि ने संभावना व्यक्त की है कि मानो शहर के मेहमान गाँव में आए हों। वाचक शब्द 'ज्यों' है, अतः यहाँ 'उत्प्रेक्षा अलंकार' है।

• देखन नगर भूप सुत आए। समाचार पुरवासिन पाए।
धाए काम धाम सब त्यागी। **मनहुँ** रंक निधि लूटन लागी।।

अर्थात्– राम-लक्ष्मण (राजा दशरथ के पुत्र) के जनकपुरी में आने का समाचार सुनकर सारे नगरवासी सारे काम छोड़कर उनके दर्शन करने भागे मानो निर्धन को निधि (खज़ाना) मिल गया हो। इसमें वाचक शब्द 'मनहुँ' है। अतः यहाँ 'उत्प्रेक्षा अलंकार' है।

4. अतिशयोक्ति अलंकार

'अतिशयोक्ति' शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है– 'अतिशय' तथा 'उक्ति' अर्थात ऐसी उक्ति जो अतिशयता के साथ कही गई हो या बढ़ा-चढ़ाकर कही गई हो।

इस तरह कविता में जब 'प्रस्तुत' या 'उपमेय' का वर्णन बहुत बढ़ा-चढ़ाकर अतिशयपूर्ण ढंग से किया जाता है, तब वहाँ 'अतिशयोक्ति अलंकार' होता है। निम्नलिखित उदाहरण देखिए–

हनुमान की पूँछ में, लगन न पाई आग।
लंका सगरी जल गई, गए निसाचर भाग।।

अर्थात्– हनुमान की पूँछ में अभी आग लग भी न पाई थी कि (उससे पहले ही) सारी लंका जल गई और सारे निशाचर भाग गए। यहाँ प्रसंग का वर्णन बढ़ा-चढ़ाकर किया गया है, अतः 'अतिशयोक्ति अलंकार' है।

अन्य उदाहरण–

• वह शर इधर गांडीव गुण से भिन्न जैसे ही हुआ।
धड़ से जयद्रथ का इधर, सिर छिन्न वैसे ही हुआ।।

अर्थात्– अर्जुन के गांडीव से तीर निकलकर जैसे ही अलग हुआ, वैसे ही जयद्रथ का सिर धड़ से कटकर अलग हो गया। यहाँ भी प्रस्तुत प्रसंग का वर्णन बढ़ा-चढ़ाकर किया गया है, अतः 'अतिशयोक्ति अलंकार' है।

• देख लो साकेत नगरी है यही
स्वर्ग से मिलने गगन में जा रही

यहाँ 'साकेत' नगरी का वर्णन है, जिसके गगनचुंबी भवन इस प्रकार के हैं, जिन्हें देखकर लगता है मानो

प्यारी नगरी आकाश से मिलने जा रही हो। यहाँ साकेत नगरी का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन किया गया है, अत: 'अतिशयोक्ति अलंकार' है।

- आगे नदिया पड़ी अपार, घोड़ा कैसे उतरे पार।
  राणा ने सोचा इस पार, तब तक चेतक था उस पार।।
  अर्थात– जब तक राणा ने सोचा कि अपार नदी को घोड़ा कैसे पार करेगा, उससे पहले ही चेतक (राणा का घोड़ा) नदी के उस पार था। सोचने से पहले ही चेतक ने नदी पार की, यह अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन है। अत: इसमें 'अतिशयोक्ति अलंकार' है।
- 'मुख बाल रवि सम लाल होकर, ज्वाल-सा बोधित हुआ।'
  उपमेय = मुख, उपमान = बाल रवि
  मुख का बाल रवि के समान लाल ज्वाला जैसा लगना अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन है, अत: यह 'अतिशयोक्ति अलंकार' का उदाहरण है।
- देखि सुदामा की दीन दशा, करुणा करके करुणानिधि रोए।
  पानी परात को हाथ छुओ नहिं, नैनन के जल सों पग धोए।।
  अर्थात– सुदामा की दीन दशा देखकर श्री कृष्ण करुणापूर्वक रो पड़े। सुदामा के पैरों को धोने के लिए परात में जो पानी मँगाया था, उसको तो छुआ ही नहीं, अपने आँसुओं के जल से ही सुदामा के पग (पैर) धो दिए।
  सुदामा के पैरों को धोने का वर्णन अतिशयोक्तिपूर्ण है। अत: यहाँ 'अतिशयोक्ति अलंकार' है।
- 'प्राण छूटै प्रथमै रिपु के रघुनायक सायक छूट न पाए'
  अर्थात– राम के बाण छूट भी नहीं पाते थे, उससे पहले ही रिपु (शत्रु) के प्राण छूट जाते थे। यह संभव नहीं हो सकता, अत: अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन होने के कारण 'अतिशयोक्ति अलंकार' है।
- शर खींच उसने तूण से कब किधर संधाना उन्हें।
  बस बिद्ध होकर ही विपक्षी वृंद ने जाना उन्हें।।
  अर्थात– उसने कब तूण से तीर निकालकर संधान किया, इस बात को विपक्षी दल ने तभी जाना, जब शत्रु घायल होकर गिर पड़ा। अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन है, अत: 'अतिशयोक्ति अलंकार' है।

  अब कुछ अन्य उदाहरण देखिए–
- पीय गमन की बात सुनि सूखे तिन के अंग
- अनियारे दीरघ दृगनु, किती न तरुनि समान।
  वह चितवन औरे कछु, जिहिं बस होत सुजान।
- बाँधा था विधु को किसने इन काली जंजीरों से
  मणि वाले फणियों का मुख, क्यों भरा हुआ हीरों से।

5. मानवीकरण अलंकार

'मानवीकरण' शब्द का अर्थ है–'किसी को मानव बना देना।' वस्तुत: काव्य में कवि जब प्रकृति का वर्णन करता है, तो प्रकृति को इस रूप में चित्रित करता है, जैसे वह कोई 'मानव' या 'मानवी' हो। ऐसे स्थलों पर 'मानवीकरण अलंकार' होता है।

हिंदी साहित्य के 'छायावादी' युग के कवियों ने अपनी कविता में प्रकृति को 'नारी', 'शक्ति' आदि के रूप में चित्रित किया है। प्रकृति उनकी कविता में मानवी के रूप में आती है और वहीं से हिंदी में 'मानवीकरण अलंकार' के दर्शन होते हैं।

उदाहरण के लिए, जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित महाकाव्य 'कामायनी' की निम्नलिखित पंक्तियाँ देखिए, जिसमें 'उषा' को जयलक्ष्मी के रूप में चित्रित कर मानवीकरण अलंकार का सुंदर उदाहरण प्रस्तुत किया गया है।

उषा सुनहले तीर बरसाती जयलक्ष्मी-सी उदित हुई,
उधर पराजित काल रात्रि भी जल में अंतर्निहित हुई।।

अर्थात्– 'उषा' का आगमन ऐसा लग रहा है, जैसे सुनहले तीरों की वर्षा करती हुई विजयलक्ष्मी प्रकट हो रही हो तथा दूसरी ओर 'रात्रि' जो पराजित हो गई है, वह मानो उषा के डर से जल-समाधि लेने जा रही है। 'उषा' तथा 'रात्रि' को कवि ने 'मानवी' के रूप में चित्रित कर मानवीकरण अलंकार का सुंदर चित्र प्रस्तुत किया है।

अन्य उदाहरण–

दिवसावसान का समय
मेघमय आसमान से उतर रही
वह संध्या-सुंदरी परी-सी
धीरे-धीरे-धीरे।

यहाँ 'संध्या' को एक सुंदर परी के रूप में आसमान से धीरे-धीरे उतरते हुए चित्रित करना मानवीकरण अलंकार का सुंदर उदाहरण है।

- ओ चिंता की पहली-रेखा
  अरी विश्व-वन की प्याली
  ज्वालामुखी-स्फोट की भीषण
  प्रथम कंप-सी मतवाली।

  'चिंता' की रेखाएँ मनुष्य के मस्तक पर दिखाई देती हैं, जो मनुष्य को धीरे-धीरे खा जाती हैं। चिंता की पहली रेखा को कवि मानवीकरण के द्वारा विश्व-रूपी सर्पिणी के रूप में चित्रित कर रहा है। अतः यहाँ 'मानवीकरण अलंकार' है।
- बीती विभावरी जाग री
  अंबर पनघट में डुबो रही
  तारा-घट उषा-नागरी

  यहाँ भी कवि ने उषा को उस नायिका के रूप में चित्रित किया है, जो तारा रूपी घटों को अंबर-रूपी पनघट में डुबो रही है। अतः मानवीकरण अलंकार है।
- 'लज्जा' के भाव का चित्रण कवि प्रसाद ने इस रूप में किया है; जैसे– वह कोई नवयौवना हो।
  वैसी ही माया में लिपटी, अधरों पर उँगली धरे हुए
  माधव के सरस कुतूहल का, आँखों में पानी भरे हुए
  नीरव-निशीथ में लतिका-सी, तुम कौन आ रही हो बढ़ती
  कोमल बाँहें, फैलाती-सी, आलिंगन का जादू करती।
  इतना ही नहीं 'लज्जा' भी एक मानवी के रूप में उत्तर देती है–
- 'मैं रति की प्रतिकृति लज्जा हूँ, शालीनता सिखाती हूँ'। लज्जा 'रति' की प्रतिकृति/प्रतिबिंब है जो युवति को शालीनता की शिक्षा देती है। उपर्युक्त दोनों उदाहरण 'मानवीकरण' के सुंदर उदाहरण हैं।
- सिंधु-सेज पर धरा-वधू अब
  तनिक संकुचित बैठी-सी।

प्रथम निशा की हलचल स्मृति में
मान किए-सी ऐंठी-सी।

यहाँ पृथ्वी के मानवीकरण का एक सुंदर चित्र प्रस्तुत किया गया है। इसमें पृथ्वी को वधू के रूप में चित्रित किया गया है, जो कि संकोच में रूठी हुई-सी बैठी है। अत: यहाँ 'मानवीकरण अलंकार' है।
उपर्युक्त पंक्तियों में पृथ्वी को संकोच में रूठी हुई-सी बैठी हुई वधू के रूप में चित्रित किया गया है।

- सुमित्रानंदन पंत की निम्नलिखित पंक्तियों में 'गंगा' नदी का मानवीकरण किया गया है–

  सैकत-शय्या पर दुग्ध-धवल
  तन्वंगी गंगा ग्रीष्म विरल
  लेटी है शांत, क्लांत, निश्चल।

विभिन्न अलंकारों में अंतर

1. यमक तथा श्लेष अलंकार में अंतर

यमक	श्लेष
1. एक शब्द का प्रयोग एक से अधिक बार होता है, पर प्रत्येक के अलग-अलग अर्थ होते हैं; जैसे– '**कनक कनक** तै सौगुनी मादकता अधिकाय' यहाँ पहले 'कनक' का अर्थ 'धतूरा' है तथा दूसरे 'कनक' का अर्थ सोना' है।	1. किसी शब्द का प्रयोग तो एक बार ही होता है, पर उसके एक से अधिक अर्थ निकलते हैं; जैसे– 'मंगन को देखि, **पट** देति बार बार है' यहाँ 'पट' शब्द के दो अर्थ हैं– 'दरवाज़ा' तथा 'वस्त्र'।

2. उपमा तथा रूपक अलंकार में अंतर

उपमा	रूपक
1. प्रस्तुत तथा अप्रस्तुत या उपमेय और उपमान के बीच समानता दिखाई जाती है; जैसे– 'पीपर पात सरिस मन डोला' अर्थात पीपल के पत्ते के समान मन डोलने लगा।	1. प्रस्तुत पर अप्रस्तुत का या उपमेय पर उपमान का आरोपण किया जाता है; जैसे– 'चरण-कमल बंदौ हरिराई'। कमल रूपी चरणों की वंदना की जा रही है।
2. उपमा के चार अंग होते हैं– (i) उपमेय (ii) उपमान (iii) वाचक शब्द (iv) साधारण धर्म।	2. चूँकि प्रस्तुत पर अप्रस्तुत का आरोपण होता है, अत: केवल दो ही अंग होते हैं– (i) उपमेय (ii) उपमान

3. रूपक तथा उत्प्रेक्षा अलंकार में अंतर

रूपक	उत्प्रेक्षा
1. प्रस्तुत पर अप्रस्तुत का जहाँ आरोपण होता है, वहाँ रूपक अलंकार होता है; जैसे– 'मुख-चंद्र' 'सीता का मुख चंद्रमा ही है।	1. प्रस्तुत पर अप्रस्तुत की जहाँ संभावना की जाती है, वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है; जैसे– 'सीता का मुख मानो चंद्रमा है।'
2. उपमेय तथा उपमान पदों के बीच प्राय: योजक-चिह्न लगा होता है।	2. मानो, ज्यों, जनुँ आदि वाचक शब्दों का प्रयोग होता है।

9. राजेश जोशी-बच्चे काम पर जा रहे हैं

- सारी रंग बिरंगी किताबों को
  क्या काले पहाड़ के नीचे दब गए हैं सारे खिलौने – अनुप्रास अलंकार

अभ्यास-कार्य

1. निम्नलिखित पंक्तियों में निहित अलंकारों का चयन कीजिए।

1. कन्हैया किसको कहेगा तू मैया।
   (क) यमक अलंकार (ख) श्लेष अलंकार (ग) रूपक अलंकार (घ) अनुप्रास अलंकार
2. भजुमन चरण-कमल अविनासी।
   (क) श्लेष अलंकार (ख) अनुप्रास अलंकार (ग) रूपक अलंकार (घ) यमक अलंकार
3. भूप सहस दस एक ही बारा। लगे उठावन टरई न टारा।
   (क) अनुप्रास अलंकार (ख) अतिशयोक्ति अलंकार (ग) यमक अलंकार (घ) रूपक अलंकार
4. मेरे मानस के मोती।
   (क) श्लेष अलंकार (ख) उपमा अलंकार (ग) रूपक अलंकार (घ) यमक अलंकार
5. रघुपति राघव राजा राम।
   (क) अनुप्रास अलंकार (ख) उपमा अलंकार (ग) रूपक अलंकार (घ) यमक अलंकार
6. नीलिमा लतिका-सी तन्वंगी है।
   (क) रूपक अलंकार (ख) उपमा अलंकार (ग) अतिशयोक्ति अलंकार (घ) मानवीकरण अलंकार
7. संतो भाई आई ज्ञान की आँधी रे।
   (क) उपमा अलंकार (ख) रूपक अलंकार (ग) अतिशयोक्ति अलंकार (घ) मानवीकरण अलंकार
8. जेते तुम तारे, तेते नभ में न तारे हैं।
   (क) श्लेष अलंकार (ख) उपमा अलंकार (ग) यमक अलंकार (घ) अतिशयोक्ति अलंकार
9. संदेसनि सुनि-सुनि, विरहिनि विरह दही।
   (क) अनुप्रास अलंकार (ख) उपमा अलंकार (ग) यमक अलंकार (घ) श्लेष अलंकार
10. पानी परात को हाथ छुयो नहिं नैनन के जल सो पग धोए।
    (क) उपमा अलंकार (ख) रूपक अलंकार (ग) यमक अलंकार (घ) अतिशयोक्ति अलंकार
11. प्रकृति का अनुराग-अंचल हिल रहा है।
    (क) रूपक अलंकार (ख) उपमा अलंकार (ग) मानवीकरण अलंकार (घ) यमक अलंकार
12. यह हरा ठीगना चना बाँधे मुरैना शीश पर।
    (क) अनुप्रास अलंकार (ख) मानवीकरण अलंकार
    (ग) रूपक अलंकार (घ) उपमा अलंकार
13. दान-परसु बुधि-शक्ति प्रचंडा।
    बर-विज्ञान कठिन को दंडा।।
    (क) रूपक अलंकार (ख) उपमा अलंकार (ग) मानवीकरण अलंकार (घ) यमक अलंकार

14. धीरे-धीरे उतर क्षितिज से आ बसंत-रजनी।

(क) मानवीकरण अलंकार (ख) श्लेष अलंकार (ग) उपमा अलंकार (घ) रूपक अलंकार

15. रावनु रथी विरथ रघुबीरा।

(क) यमक अलंकार (ख) श्लेष अलंकार (ग) अनुप्रास अलंकार (घ) रूपक अलंकार

16. तब बहता समय शिला-सा जम जाएगा।

(क) अनुप्रास अलंकार (ख) उपमा अलंकार (ग) रूपक अलंकार (घ) मानवीकरण अलंकार

उत्तर– 1. (घ) 2. (ग) 3. (ख) 4. (क) 5. (क) 6. (ख)
7. (ख) 8. (ग) 9. (क) 10. (घ) 11. (ग) 12. (ख)
13. (क) 14. (क) 15. (ग) 16. (ग)

2. निम्नलिखित अलंकारों से संबंधित काव्य-पंक्तियों को चुनिए।

1. मानवीकरण अलंकार

(क) देखि सुदामा की दीन दसा करुना करिकै करुनानिधि रोए।

(ख) लो यह लतिका भी भर लाई, मधु मुकुल नवल रस गागरी।

(ग) बहुरि बदन-बिधु अंचल ढाँकी।

(घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

2. यमक अलंकार

(क) हरिपद कोमल कमल से (ख) मज़बूत शिला-सी दृढ़ छाती

(ग) रति-रति शोभा सब रति के शरीर की (घ) इनमें सभी

3. रूपक अलंकार

(क) दुख है जीवन-तरु के फूल (ख) चरण-कमल बंदौ हरिराई

(ग) अंबर पनघट में डुबो रही तारा-घट उषा नागरी (घ) उपर्युक्त सभी

4. अतिशयोक्ति अलंकार

(क) भूप सहस दस एकहिं बारा लगे उठावन टरई न टारा।

(ख) मेघ आए बड़े बन-ठन के।

(ग) सिंधु-सा विस्तृत है अथाह, एक निर्वासित का उत्साह।

(घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

उत्तर– 1. (ख) 2. (ग) 3. (घ) 4. (क)

3. निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर चुनिए।

1. इनमें से कौन अर्थालंकार नहीं है?

(क) यमक अलंकार (ख) मानवीकरण अलंकार (ग) रूपक अलंकार (घ) अतिशयोक्ति अलंकार

2. किस अलंकार का संबंध वर्णों से होता है?

(क) यमक अलंकार (ख) मानवीकरण अलंकार (ग) अनुप्रास अलंकार (घ) उपमा अलंकार

3. जहाँ एक शब्द की आवृत्ति एक से अधिक बार होती है और हर बार उसका अर्थ भिन्न-भिन्न होता है, वहाँ कौन-सा अलंकार होता है?

(क) उपमा अलंकार (ख) मानवीकरण अलंकार (ग) रूपक अलंकार (घ) यमक अलंकार

4. जहाँ दो व्यक्तियों या वस्तुओं में समान गुण-धर्म होने के कारण समानता बताई जाती है, वहाँ कौन-सा अलंकार होता है?

(क) रूपक अलंकार (ख) उपमा अलंकार (ग) अतिशयोक्ति अलंकार (घ) मानवीकरण अलंकार

5. जहाँ उपमेय का वर्णन बढ़ा-चढ़ाकर किया जाता है वहाँ कौन सा अलंकार होता है?

(क) उपमा अलंकार (ख) रूपक अलंकार (ग) अतिशयोक्ति अलंकार (घ) मानवीकरण अलंकार

उत्तर– 1. (क) 2. (ग) 3. (घ) 4. (ख) 5. (ग)

4. अंतर स्पष्ट कीजिए।

1. यमक तथा श्लेष 2. उपमा तथा रूपक 3. रूपक तथा उत्प्रेक्षा 4. शब्दालंकार तथा अर्थालंकार

5. प्रत्येक अलंकार का एक-एक उदाहरण दीजिए।

1. अनुप्रास : ....
2. यमक : ....
3. श्लेष : ....
4. उपमा : ....
5. रूपक : ....
6. उत्प्रेक्षा : ....
7. अतिशयोक्ति : ....
8. मानवीकरण : ....

6. प्रस्तुत पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है? लिखिए।

1. आए महंत बसंत = ...
2. मखमल के झूल पड़े हाथी-सा टीला = ...
3. काली घटा का घमंड घटा, नभमंडल तारक वृंद खिले = ...
4. सुरभित सुंदर सुमन तुम पर खिलते हैं = ...
5. मधुबन की छाती को देखो सूखी कितनी इसकी कलियाँ = ...
6. मानो माई घनघन अंतर दामिनी = ...
7. बीती विभावरी जाग री = ...
   अंबर पनघट में डुबो रही तारा-घट उषा-नागरी = ...
8. भूप सहस दस एकहिं बारा। लगे उठावन टरत न टारा। = ...

7. निम्नलिखित पंक्तियों में से उपमेय छाँटिए।

1. प्रात नभ था बहुत नीला शंख जैसा = ...
2. हरिपद कोमल कमल से = ...
3. हाय! फूल-सी कोमल बच्ची, हुई राख की थी ढेरी = ...

4. पीपर-पात सरिस मन डोला = ...
5. उदित उदय-गिरि मंच पर, रघुवर बाल-पतंग = ...
6. शशि-मुख पर घूँघट डाले = ...
7. नभ-मंडल छाया मरुस्थल-सा = ...
8. कोटि कुलिस सम वचन तुम्हारा = ...
9. काम-सा रूप = ...
10. सोम-सा शील है राम महीप का = ...

8. **निम्नलिखित पंक्तियों में उपमान छाँटिए।**

1. सोम-सा शील है राम महीप का = ...
2. प्रात नभ था बहुत नीला शंख जैसा = ...
3. काम-सा रूप = ...
4. हरिपद कोमल कमल से = ...
5. कोटि कुलिस सम वचन तुम्हारा = ...
6. हाय! फूल-सी कोमल बच्ची, हुई राख की थी ढेरी = ...
7. नभ-मंडल छाया मरुस्थल-सा = ...
8. पीपर पात सरिस मन डोला = ...
9. उदित उदय-गिरि मंच पर, रघुवर बाल-पतंग = ...
10. शशि-मुख पर घूँघट डाले = ...

9. **निम्नलिखित पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है? नाम लिखिए।**

1. शशि-मुख पर घूँघट डाले। ....
2. मुदित महीपति मंदिर आए। ....
3. यह देखिए, अरविंद से शिशुवृंद कैसे सो रहे। ....
4. रति-रति शोभा सब रति के शरीर की। ....
5. कल कानन कुंडल मोर पखा, उर पै बनमाल बिराजत है। ....
6. हरषाया ताल लाया पानी परात भरके। ....
7. कहे कवि बेनी, बेनी व्याल की चुराई लीन्हीं। ....
8. बरसत बारिद बूँद गहि, चाहत चढ़न अकाश। ....
9. हाय! फूल-सी कोमल बच्ची हुई राख की थी ढेरी। ....
10. सिर फट गया उसका वहीं मानो अरुण रंग का घड़ा। ....
11. पीपर पात सरिस मन डोला। ....
12. आरसी से अंबर में आभा-सी उजारी लगै। ....
13. कंकन किंकिन नूपुर धुनि सुनि। ....
14. बारे उजियारो करे बढ़े अँधेरो होय। ....
15. मुख बाल रवि-सम लाल होकर ज्वाल-सा बोधित हुआ। ....
16. मनहुँ नीलमणि सैल पर, आतप पर्‌यौ प्रभात। ....

17. मैया मैं तो चंद्र-खिलौना लैहों। ....
18. मेघ आए बन-ठन के, सँवर के। ....
19. है बसुंधरा बिखरा देती, मोती सबके सोने पर। ....
20. सुनत जोग लागत है ऐसो, ज्यों करुई ककड़ी। ....
21. चरण-कमल बंदौ हरिराई। ....
22. जा तन की झाँई परे श्याम हरित दुति होय। ....
23. हिमकणों से पूर्ण मानो हो गए पंकज नए। ....
24. तीन बेर खाती थीं वे तीन बेर खाती हैं। ....
25. सहस्त्रबाहु सम सो रिपु मोरा। ....
26. कर का मनका डारि दे मन का मनका फेर। ....
27. आगे-आगे नाचती गाती बयार चली। ....
28. अपरस रहत सनेह तगा तैं, नाहिन मन अनुरागी ....
29. पुरइनि पात रहत जल भीतर ....
30. प्रीति-नदी में पाऊँ न बोर्‌यौ ....
31. सूरदास अबला हम भोरी, गुर चींटी ज्यों पागी ....
32. अवधि अधार आस आवन की ....
33. अब इन जोग सँदेसनि सुनि-सुनि, बिरहिनि बिरह दही ....
34. हमारैं हरि हारिल की लकड़ी। ....
35. सुनहु राम जेहि सिवधनु तोरा। सहस्त्रबाहु सम सो रिपु मोरा। ....
36. छुअत टूट रघुपतिहु न दोसू। मुनि बिनु काज करिअ कत रोसू। ....
37. मधुर-मधुर मुसकान मनोहर, मनहुँ देश का उजियाला ....
38. सुबरन को ढूँढ़त फिरत कवि व्यभिचारी चोर ....
39. जेते तुम तारे तेते नभ में न तारे हैं ....
40. वह दीपशिखा-सी शांत भाव में लीन ....
41. वह टूटे तरु की छुरी लता-सी दीन ....
42. सत्य सील दृढ़ ध्वजा-पताका ....
43. ले चला साथ में तुझे कनक ज्यों भिक्षु लेकर स्वर्ण-झनक ....
44. लो यह लतिका भी भर लाई ....
    मधु मुकुल नवल रस गागरी
45. मेघमय आसमान से उतर रही
    संध्या सुंदरी परी-सी ....
    धीरे-धीरे-धीरे।
46. कढ़त साथ ही म्यान तें, असि रिपु तन के प्रान ....